जल संरक्षण के लिए तालाबों के पुनर्जीवन की आवश्यकता

देश के 718 जनपदों के करीब 6,64,369 गांवों, कस्बों व शहरों में करीब 40 लाख तालाब व जल संरक्षण से संबंधित संरचनाएं मौजूद हैं। इन तालाबों को पुनर्जीवित करके हम देश का करीब 50 प्रतिशत जल संकट दूर कर सकते हैं। नीति आयोग के अनुसार हमारे देश में पिछले एक दशक में लगभग 4500 नदियां और 20 लाख तालाब व कुएं सूख चुके हैं और अगर हालात ऐसे ही जारी रहे तो वर्ष 2030 तक देश की 40 प्रतिशत आबादी के पास पीने योग्य पानी नहीं होगा। पिछले बहुत से शोध से यह सर्विदित हो चुका है कि नदियों को अविरल बनाये रखने के लिए व कुओं को जीवित करने के लिए तालाबों की एक अहम् भूमिका होती है। पिछले कुछ दशकों में तालाबों की भूमिका को हमने लगभग भुला सा ही दिया है तथा लगभग 60 प्रतिशत तालाबों को पूरी तरह से समाप्त ही कर दिया है, बाकि बचे 40 प्रतिशत तालाब या तो समाप्ति की राह पर हैं या उनमे आबादी का गन्दा पानी एकत्रित होता रहता है, जिस कारण से वे सड़ रहे हैं तथा गांवों में बीमारियों परोस रहे हैं। अगर गंभीरता से देखा जाए तो हमने प्राकृतिक जल स्रोतों को लगभग पूरी तरह से बर्बाद ही कर दिया है। जो तालाब व पोखर पहले वर्षा के शुद्ध जल को संरक्षित करते थे तथा भूमिगत जल को रिचार्ज करते थे वह आज आबादी के अति गंदे जल को एकत्रित करने तक सीमित रह गए हैं और परिणाम स्वरुप आज जमीन के नीचे प्रथम भाग का पानी पीने योग्य नहीं बचा है। पिछले कुछ समय से हमारी सरकारें तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए अग्रसर हैं जो कि एक अच्छा संकेत है लेकिन तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए जो पद्धति अपनाई जा रही हैं वह उपयुक्त नहीं हैं क्योंकि वर्तमान में तालाबों की समस्याओं में बदलाव आ चुका है। जैसे तालाबों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से तालाबों की खुदाई करके सिर्फ उनको गहरा कर दिया जाता है जिसमे पहले से ज्यादा आबादी का गन्दा पानी एकत्रित होने लगता है वह पहले से ज्यादा भूमिगत जल को दूषित करता रहता है। अब यहां सवाल उठता है कि तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए सही पद्धति क्या है? हमारे देश में कई ऐसे शिक्षण व शोध संस्थान हैं जिन्होंने तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए काफी प्रयास किये हैं और बहुत से जमीनी कार्य भी किए हैं। इस दिशा में किये गए कुछ कार्यो में से एक आई0आई0टी0 मुम्बई की पद्धति काफी कारगर है जिसको एन0आई0एच0 रूड़की ने भी अपनाया है।

कैसे करें तालाब पुनर्जीवन का कार्य?

तालाब पुनर्जीवन हेतु निम्नलिखित सावधानियां अथवा जानकारियां आवश्यक हैं।

- सर्वप्रथम पुनर्जीवन हेतु जिस तालाब का चयन किया गया है उसके सरकारी दस्तावेज (तालाब की फरद व कोई नक्शा) एकत्र कर लें। इससे आपको तालाब का क्षेत्रफल व उसके खसरा नम्बर का ज्ञान हो जाएगा।
- तालाब का चयन स्थानीय निकाय गांव/नगर पंचायत/नगर पालिका/नगर निगम के जन प्रतिनिधियों व प्रशासन के प्रतिनिधियों की सहमति से ही करें।
- तालाब की वर्तमान स्थिति का आंकलन तालाब के पास जाकर अवश्य करें।
- तालाब आबादी में है अथवा गैर–आबादी में?
- तालाब की महत्ता, उसका नाम व उसका इतिहास क्या है?
- तालाब अतिक्रमित है अथवा नहीं? अगर है तो कितना?
- तालाब अगर अतिक्रमित है तो कच्चा अतिक्रमण कितना है व पक्का कितना?
- तालाब के संबंध में कोई विवाद किसी न्यायालय में है अथवा नहीं?
- तालाब में गंदगी व गाद है अथवा नहीं?
- तालाब सूखा है अथवा उसमें पानी भरा है?
- तालाब में जलकुम्भी, घांस या पानी का पालक आदि पौधे हैं अथवा नहीं?
- तालाब में पानी आने के रास्ते कितने हैं?
- तलाब में कोई व्यवसायिक गतिविधि होती है या नहीं?
- तालाब में आने वाले पानी की मात्रा कितनी है?
- तालाब में आने वाला पानी किस गुणवत्ता का है?
- तालाब में नालियों के माध्यम से पानी के साथ अन्य क्या–क्या आता है जैसे गोबर व प्लास्टिक आदि?

तालाब के संबंध में उपरोक्त सभी जानकारियां प्राप्त होने के बाद सही प्रकार से तय किया जा सकता है कि तालाब को पुनर्जीवित करने हेतु किस प्रकार की रणनीति बनानी है? इस कार्य में कितना खर्च आएगा व कार्य कितने समय में पूर्ण हो जाएगा? अगर किसी तालाब पर किसी भी प्रकार का कानूनी विवाद है तो उसमें कार्य करने से बचना चाहिए। तालाब पुनर्जीवन का कार्य करने से पूर्व तालाब के चारों कोनों से फोटो अवश्य लेने चाहिएं जिससे कि तालाब पुनर्जीवन का कार्य पूर्ण होने पर समाज को बदलाव की तस्वीर प्रस्तुत की जा सके। इससे जहां तालाब पुनर्जीवन के कार्य को करने वाले कार्यकर्ता/व्यक्ति/संस्था का हौंसला बढ़ता है वहीं अच्छे कार्य से दूसरों को प्रेरणा भी मिलती है।

अगर तालाब में पानी व गाद भरी हुई है

ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम तालाब का पूरा पानी पम्पसेट अथवा बिजली के मोटर से बाहर निकाल दें तथा तालाब में पानी आने के सभी माध्यमों को रोककर ऐसी व्यवस्था करें कि जब तक तालाब की गाद सूख न जाए तब तक बाहर का पानी तालाब में प्रवेश न करे। इसके लिए तालाब के एक किनारे पर गडढ़ा बनाकर उसमें पानी को रोका जा सकता है तथा जब तालाब के अन्य हिस्से का कार्य पूर्ण हो जाए तो उस गडढ़े वाले हिस्से के सुधार का कार्य किया जा सकता है।

अगर तालाब में जलकुम्भी, घांस व अन्य तैरने वाली गंदगी भरी हुई है

इसमें तय करना पड़ेगा कि जलकुम्भी, घांस या अन्य तैरने वाली गंदगी के कारण तालाब का पानी सड़ तो नहीं गया है अथवा सूख तो नहीं गया है? अगर पानी है तो पहले उसे पम्प या मोटर के माध्यम से बाहर निकालना चाहिए। तालाब से निकलने वाली जलकुम्भी व घांस आदि से बहुत अच्छी खाद भी बनाई जा सकती है। इसके लिए उस पर एक तरल बायोएन्जाइम का स्प्रे करना होता है। इस संबंध में स्थानीय कृषि विभाग से भी सम्पर्क कर सकते हैं। उपरोक्त दोनों ही स्थितियों में तालाब से पानी निकालने के बाद उसे एक सप्ताह तक सूखने के लिए छोड़ दें। एक सप्ताह में तालाब की गाद इस स्थिति में आ जाएगी कि उसको मशीन अथवा मजदूरों द्वारा बाहर निकाला जा सके। तालाब की गाद तब तक निकालें जब तक कि उसकी तली में रेतीली मिट्टी न आ जाए। तालाब से निकलने वाली ऊपरी गाद को तालाब से दूर डालना चाहिए जबकि नीचे की कम नमी वाली व सूखी गाद अथवा मिट्टी से तालाब की मुंडेर बना देनी चाहिए। मुंडेर की ऊंचाई दस फीट से अधिक न रखी जाए जबकि चौडाई परिस्थिति के अनुसार दस से बीस फीट तक भी हो सकती है। मुंडेर का तालाब के अन्दर वाला हिस्सा ढलावदार होना चाहिए। वैसे तो बाहर वाला हिस्सा भी ढलावदार ही होना चाहिए लेकिन अगर ऐसा संभव नहीं है तो भी कोई परेशानी नहीं होगी। मुंडेर तालाब के किनारों पर भी घुमाऊदार होनी चाहिए। मुंडेर बनाते समय तालाब में पानी आने वाले रास्तों के लिए मुंडेर के नीचे से पानी आने की समुचित व्यवस्था (पाइप या पक्की नाली) करनी चाहिए। तालाब के किसी एक तरफ 15 से 20 फीट चौड़ाई का रास्ता तालाब में आने–जाने के लिए छोड़ना चाहिए। इस रास्ते से जहां तालाब में सफाई करना, व्यवसायिक गतिविधियां करना व पशुओं के आने–जाने में आसानी होगी।

अगर तालाब सूखा हुआ है

सूखे हुए तालाब को पानी भरे तालाब के मुकाबले पुनर्जीवित करना आसान होता है। इसमें तालाब की तली की दो से तीन फीट मिट्टी बाहर निकाल देनी चाहिए। इस मिट्टी से तालाब की मुंडेर बनाई जा सकती है। ऐसे तालाब में मजदूरों से कार्य कराना आसान होता है।

तालाब पुनर्जीवन की पद्धति

तालाब में पानी लेकर आने वाली नालियों को जोड़कर एक स्थान पर ले आएं। इसके लिए मुंडेर के बाहरी किनारे से नाली बनाई जा सकती है। अपरोक्त जानकारी के अनुसार तालाब में पानी के साथ किस–किस प्रकार की गंदगी आती है उसके उपचार हेतु समुचित व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे कि पानी के अलावा किसी भी प्रकार की गंदगी तालाब के अन्दर प्रवेश न करे। इस कार्य हेतु तीन पिट शोधन तकनीक अपनानी चाहिए।

इस पद्धति के अनुसार तालाब को दो भागो में बाटा दिया जाता है। पहले एक भाग में गंदे पानी को साफ़ करने के लिए प्राकर्तिक जल सोधन प्रणाली को विकसित किया जाता है जो कुल तालाब का लगभग 15 प्रतिशत भाग होता है, जबकि बाकि हिस्से में तालाब का निर्माण किया जाता है जो पहले भाग से शोधित जल को लगातार एकत्रित करता है। तालाब में एकत्रित हुए जल को विभिन्न इस्तेमाल में लाया जाता है जैसे मछली पालन, सिंचाई व् स्वतः भूमिगत जल संग्रहण। तालाब को इस तरह से डिज़ाइन किया जाता है कि तालाब में बरसात का पानी भी एकत्रित हो सके व नियमित रूप से आने वाले पानी का भी संचय ठीक प्रकार से किया जा सके। इस तरह तालाब को पुनर्जीवित करने की प्रणाली से न केवल तालाब पुनर्जीवित होता है बल्कि यह रोजगार का भी एक नियमित साधन मुहैया कराएगा,, जैसे तालाब को मछली पालन व सिंघाड़ा पैदा करने के कार्य में लाया जा सकता है।

मुंडेर पर पौधारोपण

तालाब किनारे बनाई गई मुंडेर के बीचोंबीच पौधे लगाने चाहिएं। इसमें नीम, जामुन, सीशम, पीपल, बड़, पिलखन व अमरूद आदि के पौधे लगाना उत्तम होता है। पौधे से दूसरे पौधे में कम से कम 10 से बीस फीट की दूरी रखनी ही चाहिए। इस कार्य में वन विभाग के साथ समन्वय बनाकर उनकी मदद भी ली जा सकती है।

तालाब में पानी की व्यवस्था

जो तालाब आबादी के अन्दर मौजूद होते हैं उनमें गांव के अन्दर का पानी ही आता रहता है। जो तालाब आबादी के बाहर होते हैं उनमें पहले बरसात का पानी भरा रहता था या फिर अधिकतर तालाबों को रजवाहों से भरने की व्यवस्था रही है। अधिकतर तालाबों में इसके लिए रजवाहे से तालाब तक सरकारी दस्तावेजों में दर्ज छोटी नालियां भी मौजूद हैं। गांव के पतरोल के पास प्रत्येक तालाब को रजवाहे से भरने का समय (घण्टों में) भी दर्ज होता था। जब इस प्रकार के तालाबों पर कार्य किया जाए तो प्रयास किया जाना चाहिए कि किसी निकट के रजवाहे से उसको नाली के माध्यम से जोड़ा दिया जाए जिससे कि बरसात के दौरान रजवाहे के अतिरिक्त पानी को तालाब में लाया जा सके।

भूजल से तालाब नहीं भरना चाहिए

तालाब का उद्देश्य एक ओर जहां गांव के पानी को एकत्र करना होता है वहीं बरसात के पानी को भी तालाब अपने आप में समा लेता है। इसीलिए तालाब का कार्य उसमें भरे पानी को धीरे–धीरे भूजल तक पहुंचाना होता है तथा उसका उपयोग गांव की बहुत सी गतिविधियों (पशुओं को नहलाने व पानी पिलाने, सिंघाड़ा पालन, मछली पालन, धोबियों के कपड़े धोने तथा सन को गलाने आदि) के लिए किया जाता रहा है। अगर तालाब का सबसे महत्वपूर्ण लाभ देखें तो वह है कि तालाब पानी को प्राकृतिक तरीके से साफ करके भूजल में पहुंचाता रहता है। ऐसे में तालाब को ट्यूबवेल आदि द्वारा भूजल निकालकर भरना तालाब की मूल आत्मा के खिलाफ है। ऐसी गतिविधि को किसी भी प्रकार से सही नहीं ठहराया जा सकता है। मछली पालन या सिंघाड़ा पालन जैसी गतिविधयों के लिए भी ऐसे तालाब में ही अनुमति दी जानी चाहिए जिसमें किसी रजवाहे आदि से सतही पानी आ सके। तालाब को भूजल से भरकर किसी भी प्रकार की व्यवसायिक गतिविधि को नहीं करना चाहिए। इसको सरकार के स्तर से भी प्रतिबंधित करना चाहिए।

तालाब पर बोर्ड लगाएं

तालाब किनारे उसका सम्पूर्ण परिचय देता हुआ एक बोर्ड अवश्य लगाना चाहिए। बोर्ड पर निम्न जानकारियां होनी चाहिएं।

⇒ तालाब का नाम
⇒ तालाब का इतिहास
⇒ तालाब का क्षेत्रफल
⇒ तालाब का खसरा नम्बर
⇒ तालाब की जल ग्रहण क्षमता
⇒ एक वर्ष में तालाब में आने वाले अनुमानित पानी की मात्रा
⇒ एक वर्ष में तालाब से रिचार्ज होने वाले पानी की अनुमानित मात्रा
⇒ तालाब के पुनर्जीवन की दिनांक
⇒ तालाब पुनर्जीवन में सहयोग

NEER FOUNDATION

NEER Foundation
Ist Floor, Samrat Shopping Mall, Garh Road, Meerut (UP)
9411676951
theneerfoundation@gmail.com, raman4neer@gmail.com

तालाब उत्सव